बयान कि सेक्योरिटी फोर्सेस के आदमी मौजूद थे और मैं उनके सामने से निकल आया, क्या यह गलत है और अगर यह गलत है तो उसको पकड़ा क्यों नहीं गया? केवल एक आदमी पकड़ा है ।

दूसरा सवाल यह खड़ा होता है कि इंटरव्यू कहां हुआ ? क्या यह पाकिस्तान की सीमा में हुआ या भारत की सीमा में हुआ ? यदि पाकिस्तान की सीमा में हुआ है तो हमारे पत्रकार और इंटरव्यू लेने वाले वहां कैसे गए ? क्या पाकिस्तान ने उनको इजाजत दी थी ? मुझे लगता है कि इंटरव्यू हमारे ही क्षेत्र, भारत में हुआ है अगर भारत में इंटरव्यू हुआ तो जब वहां के पत्रकारों को मालूम है कि वह कहां है, टी०वी० वालों को मालूम है कि वह कहां मौजूद है तो क्या हमारी सरकार को मालूम नहीं है कि वह कहां है ? अगर सरकार को मालूम है कि वह भारत की सीमा के अन्दर कहां है तो उसको क्यों नहीं पकड़ा गया है ? क्या मजबूरी है ? ये दोनों सवाल एक दूसरे के साथ जुड़ जाते हैं । वे कहते हैं कि वहां पर सेक्योरिटी फोर्सेस की मौजूदगी में वे निकल आए । अगर वे हिन्दुस्तान की सीमा में मौजूद हैं और पत्रकार सम्मेलन कर रहे हैं तो क्या सरकार को इस बारे में जानकारी नहीं है ? इसका मतलब हमारा संदेह यकीन में बदल जाता है कि वहां से सरकार ने ही उसको जानबूझकर जाने दिया है ? अगर जाने दिया है तो क्यों जाने दिया है इसका जवाब सरकार को हिन्दुस्तान की जनता के सामने देना पड़ेगा । यह मेरे दो सवाल हैं । इनका सरकार अगर अभी न सही तो बाद में जवाब दे ।

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) उपसभापतिजी महोदय श्री जगमोहन जी के साथ मैं अपने को सबद्ध करते हुए सुझाव देना चाहता हूं प्रार्थना करना चाहता हूं । भारत सरकार बार बार यह कहती है प्रधान मंत्री जी कहते हैं कि हम कश्मीर में हालात ठीक करना चाहते हैं और वहां पर जो संवैधानिक प्रक्रिया है, उसको प्रारंभ करना चाहते हैं । महोदय संवैधानिक प्रक्रिया प्रारंभ करने के लिए कश्मीर की जनता और कश्मीर की जनता के प्रतिनिधियों को जो राजनीतिक दलों में काम कर रहे हैं उनको विश्वास में लेना और उनके द्वारा वहां की जनता को सही हालात बताने के लिए उनका उपयोग टेलीविजन और मीडिया में होना चाहिए । लेकिन सरकार इसके विपरित काम कर रही है । यह आतंकवादियों को विश्वास में लेती है और आतंकवादियों का प्रचार-प्रसार मीडिया से कराती है उन्हें टेलीविजन पर दिखाती है । मैं आपके द्वारा सरकार से मांग करूंगा कि आप कश्मीर की जनता को विश्वास में लीजिए कश्मीर की जनता के प्रतिनिधि जो राजनतिक दल हैं उनको विश्वास में लीजिए । उनके इंटरव्यू, उनके द्वारा अपील कश्मीर के लोगों के लिए टेलीविजन में और अखबारों में साया कराइए और आप उनकी सुरक्षा का पूरा बंदोबस्त करिए तभी वहां पर यह प्रक्रिया रेस्टोर होगी । इन शब्दों के साथ जगमोहन जी ने जो कहा है, उससे मैं अपने को सबद्ध करता हूं ।

RE: UNNECESSARILY ENTRY AND GROWING IN PARLIAMENT PRECINTICS

श्री मोहम्मद सलीम (पश्चिमी बंगाल) : उपसभापति महोदया, मैं जिस की तरफ आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं और आपके जरिए पूरे सदन का भी ध्यान दिलाना चाहता हूं, वह पार्लियामेंट के बाहर की बात नहीं है, यह अपने सदन का ही मामला है । हम लोग यहां पर काफी बातें उठाते रहे हैं । कुछ रोज पहले सेक्योरिटी की बात यहां पर उठायी थी । यह हमारा सदन जो है यह हायस्ट बाडी आफ डिसीजन मेकिंग इन अवर डेमोक्रेसी है। लेकिन यहां, पिछले कुछ दिनों से यह देखा जा रहा है कि बहुत से लोग, पता नहीं आथराइज्ड या अनआथराइज्ड, यह मैं चाहिए, नहीं समझ सकता जो इसके लिए, एन्टाइटल्ड टु सी हैं, उनको यह देखना लेकिन काफी भीड़ पार्लियामेंट के आसपास बढ़ती जा रही है । पहले ऐसा था कि ऊपर भीड़ रेस्टोरेंट में होती थी लेकिन आजकल कॉरडॉर में आप देखेंगे, कारेडोर पावर आफ डेमोक्रेसी है, आप यहां से इनर

लाबी के बाहर तक जायें तो देखेंगे तो बहुत सी भीड़ है । तो ये कौन से लोग हैं यह हमको मालूम होना चाहिए । जो मेंबर नहीं हैं, जो यहां के स्टाफ नहीं हैं, क्या ये आई०बी० के लोग हैं, पुलिस के लोग हैं, या वेस्टेट इंटरेस्ट ग्रुप के लोग हैं, बिजनेस इंटरेस्ट ग्रुप के लोग हो सकते हैं । जो हमारे यहां के प्रोसीजर में या जो काम में चाहे क्वेश्चन हो या कोई दूसरा मामला हो, हमें थोडा अहतियात बरतनी चाहिये, वह इनफ्लुयेंस करना चाहते हैं हमारे सिस्टम के अन्दर । ऐसा है कि हमारे जो मेम्बर हैं उनको भी ध्यान रखना चाहिये । सिर्फ सिक्यु रिटी का मामला नहीं है, सिर्फ वाच एंड वार्ड का मामला नहीं है । वह देखते रहते हैं । मैं अगर कुर्ता पायजामा पहन कर आता हूं तो सलाम मारते हैं और अगर मैं पेंट शर्ट पहन कर छोटे गेट से अन्दर आता हूं तो रोकते है और पूछते है कि आप कौन हैं, कहां से आ रहे हैं । लेकिन ऐसे लोग घूमते रहते हैं काफी मजे से और मजे मार रहे हैं, इधर अंदर, ऊपर नीचे बाहर सब जगह घूमते रहते हैं । सदन के अन्दर नहीं आ पाए हैं, इन्नर लाबी में भी नहीं आ पाए हैं । मैं चाहता हूं कि चेयरमैन साहब, आप, हमारे सेक्रेटेरियेट डिफरेंट पार्टीज के लीडर्स से बात करें, एम.पी ज. से बात करें । अपने सेक्रेटरीज के पास भी हम लोग देते हैं । किसी को इंटरसेप्ट भी किया गया मैं नाम नहीं लेना चाहता हूं लेकिन वह सेक्रेटरी है एम.पी. के, मैं किसी खास नाम पर कुछ नहीं कहना चाहता हैं लेकिन हमें भी थोड़ा अहतियात बरतनी चाहिये । हमारे जो जो लोग यहां इनवाल्व्ड हैं चेयरमैन साहब से लेकर एम.पीज. तक या स्टाफ के जो सेक्रेटेरियेट के लोग हैं, वाच एंड वार्ड के लोग हैं, सब को अहतियात बरतनी चाहिए । यहां पर ऐसे जो लाबिंग करने आते हैं या डिफरेंट इंटरेस्ट्स की या बिजनेस इंटेरेस्ट्स की लाबी करते हैं, ऐसे लोगों की भीड़ हम यहां नही बढाना चाहते हैं । इस बारे में हम समझते हैं कि आप चेयरमैन साहब से बात करके तवज्जो देंगे क्योंकि यह जो जम्हूरियत का मन्दिर है इसको पाक साफ रखा जाना चाहिये ।

†[شری محمد سلیم "پشچمی بنگال": اپ سبھاپتی مہودیہ - میں جسکی طرف آپکا دھیان دلانا چاہتا ہوں اور آپکے ذریعہ پورے سدن کا بھی دھیان دلانا چاہتا ہوں وہ پارلیمنٹ کے باہر کی بات نہیں ہے - یہ اپنے سدن کا ہی معاملہ ہے - ہم لوگ یہاں پر کافی باتیں اٹھاتے رہے ہیں - کچھ روز پہلے سیکیورٹی کی بات یہاں پر اٹھائی تھی - یہ ہمارا سدن جو ہے یہ ٹمپل آف دی ہائیسٹ باڈی آف دی سیزن میکنگ ان اور ڈیموکریسی" ہے - لیکن یہاں پچھلے کچھ دنوں سے یہ دیکھا جا رہا ہے کہ بہت سے لوگ پتہ نہیں آتھورائزڈ یا ان آتھورائزڈ" یہ میں نہیں سمجھ سکتا جو اسکیلئے انفاعلسٹ ٹو سی" ہیں ان کو یہ دیکھنا چاہیئے - لیکن کافی بھیڑ پارلیمنٹ کے آس پاس بڑھتی جا رہی ہے - پہلے ایسا تھا کہ اوپر بھیڑ میں ریسٹورنٹ میں ہوتی تھی لیکن آج کل کوریڈور" میں آپ دیکھیں گے کوریڈور پاور آف ڈیموکریسی" ہے - آپ یہاں سے "انر لابی" سے باہر تک جائیں تو دیکھینگے تو بہت سی بھیڑ ہے - تو یہ کونسے لوگ ہیں یہ ہم کو معلوم ہونا چاہیئے جو ممبر نہیں ہیں جو یہاں کے اسٹاف نہیں ہیں - کیا یہ آئی بی-

†[ ]Transliteration in Arabic Script

کے لوگ ہیں۔ پولیس کے لوگ ہیں یا "ویسٹ
انٹرسٹ گروپ" کے لوگ ہیں بزنس
انٹرسٹ گروپ کے لوگ ہیں جو ہمارے
یہاں کے پروسیجر میں یا جو کام میں چاہے
کوٹیشن ہوں یا دوسرا معاملہ ہو ہمیں
تھوڑا احتیاط برتنی چاہئے۔ وہ انفلیوینس
کرنا چاہتے ہیں ہمارے سسٹم کے اندر۔
ایسا ہے کہ ہمارے جو ممبرس ہیں انکو بھی
دھیان رکھنا چاہئے۔ صرف سیکیورٹی
کا معاملہ نہیں ہے۔ صرف "واچ اینڈ وارڈ"
کا معاملہ نہیں ہے وہ دیکھتے رہتے ہیں۔
میں اگر کرتا پائجامہ پہن کر آتا ہوں
تو سلام مارتے ہیں اور اگر میں پینٹ
شرٹ پہن کر چھوٹے گیٹ سے اندر آتا
ہوں تو روکتے ہیں اور پوچھتے ہیں کہ آپ
کون ہیں کہاں سے آرہے ہیں لیکن ایسے
لوگ گھومتے رہتے ہیں سدن کے اندر
نہیں آ پائے ہیں۔ "انر لابی" میں بھی نہیں
آ پائے ہیں میں چاہتا ہوں کہ چیئرمین
صاحب آپ ہمارے سیکریٹریٹ کے
ڈفرنٹ پارٹیز کے لیڈرس سے بات کریں
ایم۔پیز۔ سے بات کریں۔ اپنے سیکریٹریز
کے پاس بھی ہم لوگ دیتے ہیں۔ کسی
کو انٹرسپٹ بھی کیا گیا ہے۔

شری محمد سلیم "جاری": نام نہیں لینا
چاہتا ہوں لیکن وہ سیکریٹری ہیں ایم۔پی۔
کے میں کسی خاص نام پر کچھ نہیں کہنا چاہتا
ہوں لیکن ہمیں بھی تھوڑا احتیاط رکھنی
چاہئے۔ ہمارے جو لوگ یہاں [illegible]
ہیں چیئرمین صاحب سے لے کر ایم۔پیز۔ تک
یا اسٹاف کے جو سکریٹریٹ کے لوگ
ہیں واچ اینڈ وارڈ کے لوگ ہیں سب کو
احتیاط برتنی چاہئے۔ یہاں پر ایسے جو
لابنگ کرنے آتے ہیں یا ڈفرنٹ انٹرسٹ
کی یا بزنس انٹرسٹس کی لابی کرتے ہیں
ایسے لوگوں کی بھیڑ ہم یہاں نہیں بڑھانا
چاہتے ہیں۔ اس بارے میں ہم سمجھتے
ہیں کہ آپ چیئرمین صاحب سے بات
کرکے توجہ دیجئے کیونکہ جو جمہوریت
کا مندر ہے اسکو پاک صاف رکھا جانا
چاہئے۔ "ختم شد"]

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीम अफजल (उत्तर प्रदेश) : आपने तो यहां अन्दर की बात कही । यह जो पालियामेंट हाउस का रिसेप्शन है, वहां पर भी मैंने महसूस किया है कई बार कुछ परमानेंट चेहरे हैं जो वहा मुसलसल बैठे रहते है। मैं नहीं जानता क्या करते हैं लेकिन उनमें मे एकाध बार किसी ने हमसे बात भी करने की कोशिश की और कोई पर्चा पकड़ा दिया कि यह हमारा काम करवा दीजिये । लेकिन एक ही आदमी अगर बार बार किसी से काम को कहता है तो इसका मतलब है जैसे कि सलीम साहब ने कहा कि लाबिंग की जा रही है। यह सिर्फ पालियामेंट के अन्दर ही नहीं,

श्री मोहम्मद अफजल उर्फ मीन अफजल रिसप्शन पर भीड़ लगी रहती है। वहां पर कुछ लोग ऐसे हैं जो मैं शक्ल देखकर पहचान सकता हूं। मैं मुस्तिकल वहां देखता हूं। यह भी है कि किसी मैम्बर आफ पालियामेंट के सेक्रेटरी नहीं हैं, वह स्टाफ के मैम्बर भी नहीं हैं और वह यह भी नहीं हैं कि किसी से मिलने आए हों। वह बैठे रहते हैं और बैठे हुए चाय पीते रहते हैं। अक्सर वहां वी.आई.पी. या दूसरे लोग आते जाते हैं, उनसे कोशिश करके राफ्ता बढ़ा कर कोई काम करवाने की कोशिश करते हैं। मुझे ऐसा लगता है कि यह बहुत सीरियस मामला सलीम साहब ने उठाया है। हमारी सबकी जिम्मेदारी है लेकिन इसके साथ-साथ जो पालियामेंट का पूरा ढांचा है, जो हमारा सिक्युरिटी सिस्टम है, उसकी तरफ तवज्जोह देनी चाहिये। यह बड़ा अहम मसला है।

†[شری محمد افضل عرف م۔ افضل: آپنے تو یہاں اندر کی بات کہی یہ جو پارلیمنٹ ہاؤس کا ریسپشن ہے وہاں پر بھی میں نے محسوس کیا ہے کئی بار کچھ پرمانینٹ چہرے ہیں جو وہاں مسلسل بیٹھے رہتے ہیں۔ میں نہیں جانتا کہ کیا کرتے ہیں لیکن ان میں سے کسی نے ایک دو بار ہم سے بات بھی کرنے کی کوشش کی اور کوئی پرچہ پکڑا دیا کہ یہ ہمارا کام کروا دیجئے۔ لیکن ایک ہی آدمی اگر بار بار کسی سے کام کو کہتا ہے تو اسکا مطلب ہے کہ جیسے کہ سلیم صاحب نے کہا کہ لوبنگ کی جا رہی ہے۔ یہ صرف پارلیمنٹ کے اندر ہی نہیں ہے ریسیپشن پر بھی بھیڑ لگی رہتی ہے۔ وہاں پر کچھ لوگ ایسے بھی ہیں۔ جو میں شکل دیکھکر پہچان سکتا ہوں۔ میں مستقل وہاں دیکھتا ہوں۔ یہ بھی ہے کہ کسی ممبر آف پارلیمنٹ کے سیکریٹری نہیں ہیں۔ وہ اسٹاف کے ممبر بھی نہیں ہیں اور وہ یہ بھی نہیں ہیں کہ کسی سے ملنے آئے ہوں وہ بیٹھے رہتے ہیں اور بیٹھے ہوئے چائے پیتے رہتے ہیں۔ اکثر وہاں وی۔آئی۔پی یا دوسرے لوگ آتے جاتے ہیں ان سے کوشش کرکے رابطہ بڑھا کر کوئی کام کرانے کی کوشش کرتے ہیں مجھے ایسا لگتا ہے کہ یہ بہت سیریس معاملہ سلیم صاحب نے اٹھایا ہے۔ ہماری سب ذمہ داری ہے لیکن اسکے ساتھ ساتھ جو پارلیمنٹ کا پورا ڈھانچہ ہے۔ جو ہمارا سیکیورٹی سسٹم ہے۔ اسکی طرف توجہ دینی چاہئے۔ یہ بڑا اہم مسئلہ ہے]

†[ ]Transliteration in Arabic Script

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West Bengal): It is not a question that some of the an authorised people are frequenting this Parliament House. That is not the only point. The important point is, I am given to understand that representatives of important financial interest and of

industrial houses are on a regular visit to this House. Not only they are lobbying with the Members but they are also interfering with questions. I was told sometime back when a question about a particular industrial house was put, he had even approached a Member. This is going on, this is a very unfortunate situation This is Parliament, and we are free to ask questions, we are free to make our views. This is not a place where lobbying should be done by the representatives of the industrial houses But this is taking place, By industrial house, I mean, Indian Industrial houses and foreign industrial houses. Therefore, some method has to be found out by the hon. Chairman and hon. Deputy Chairman to ensure that these people are not able to visit this House regularly. I am told that they are even sitting in the rooms of some officials. I am told, I am not sure. Enquiry should be done. They are even sitting in some of the rooms of some officials and maintaining their lobbying, their contact, their communication just to ensure that they are not properly booked, their cases are not exposed, their role is not being protested against or criticised. It is a very peculiar thing. We don't permit lobbying in the House or around the House. We do not permit it. Therefore, I will request you. Madam, to take steps so that the lobbying by representatives of financial interests particularly of industrial houses is stopped here and now

THE DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Jaipal Reddy, you also have something to say?

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Just a minute. I wish the Members also became vigilant. We should not give passes to everybody we like. We should scrutinize them. How can they get access to it?

SHRI S. JAIPAL REDDY (Andhra Pradesh): While associating myself with my hon. colleagues, I would like to point out that I find some of them, even in the Library and they get prior intimation about questions put, and sometimes they are able to obtain answers. We find all kinds of characters. I am not referring to security men who have to necessarily remain anonymous in the interest of security. I have no objection to that. But I am referring to lobbying. I think it is very important that our officers must remain alert, our Members also remain alert.

THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI VIDYA-CHARAN SHUKLA): There used to be one Ethics Committee in the House, I think we should revise it. We should revive that Ethics Committee for any such complaints because we are interested in upholding the dignity of the House and the reputation of the House and any such complaints and doubts that come up before the House should be put before the Ethics Committee and them action should be taken according to the advice of the Ethics Committee by the hon. Chairman on this matter I think such a revival of the Ethics Committee is important.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: This Committee should be revived and all parties should be represented and effective steps should be taken to stop, stop absolutely this kind of lobbying.

SHRI S. JAIPAL REDDY: Madam. during Nehru's time, one Member of Parliament was expelled merely on the ground that he took Rs. 5000/-. I think it is very important to have an Ethics Committee. We never had one, in those days past, we never reared one. Now. we badly require a Committee on Ethics.

SHRI TRILOKI NATH CHATURVEDI (Uttar Pradesh): While speaking on Lokpal Bill or the Ombudsman Bill made by my friend, I had myself made this suggestion that this Committee must be set up. I do not think that at any time a Committee of this kind existed. But if it existed let this be revived. But I made this suggestion much earlier. As far as I know, no such Committee existed but this was the suggestion which I made here and also made before the hon. Speaker when there was a discussion outside about the working of the Standing Committees. What is the use of many Standing Committees when a lot of misdemeanours go unnoticed and all kinds of allegations come in the press about Members of Parliament and the things they do or they do not do many of which are referred to on the floor of the House?

श्री राज बब्बर (उत्तर प्रदेश) : उपसभापति महोदया, अभी सदन के अन्दर सत्ता के गलियारों की सुरक्षा, देश की गरिमा और देश की सुरक्षा के बारे में बात-चीत हुई। लेकिन इसका एक बुनियादी सवाल और था, जो बहुत देर से मैं कहने की कोशिश कर रहा हूं कि 23 तारीख से इस देश में एक ऐसा कानून... **(व्यवधान)**

उपसभापति : अभी वह कानून बंद हो गया।

श्री राज बब्बर : मैडम, मेरी बात तो सुनिये।

उपसभापति : नहीं, इसके बारे में बात नहीं सुनगी।

श्री राज बब्बर : बल्कि मैं तो सरकार को बधाई देना चाहता हूं.. **(व्यवधान)** बिल के बारे में बात नहीं कर... **(व्यवधान)**

उपसभापति : वह बाद में बोल देना ... **(व्यवधान)**

श्री राज बब्बर : बल्कि यहां पर सत्ता के गलियारों, माननीय सांसदों के स्वाभिमान की सुरक्षा के बारे में बात हो सकती है तो मैं कह रहा हूं कि इस देश के लोग जो कि हजारों की तादाद में जेल में उस छुरी से, ऐसी छुरी से... **(व्यवधान)** उससे घायल हैं उनके बारे में सरकार मान रही है कि मिसयूज़ हुआ है, दुरुपयोग हुआ है लेकिन किसी जवाब... **(व्यवधान)** नहीं किया गया है .... **(व्यवधान)**

THE DEPUTY CHAIRMAN: You cannot speak on every subject at the same time. Just one second, please.

श्री राज बब्बर : मैं विनती करूंगा कि आप जैसा कि माननीय सांसद.... **(व्यवधान)**

THE DEPUTY CHAIRMAN: One minute, please. Nothing is going on record till he listens to me. Please sit down.

श्री राज बब्बर : यह.. **(व्यवधान)** लाया जा रहा है.. **(व्यवधान)**

THE DEPUTY CHAIRMAN: You do not know the rules of this House. Mr. Md. Salim was permitted to raise the issue in the House. Then, I allowed the other Members to speak as they sought my permission. If you are concerned about my other issue, I will permit you. But before that, I have to make some comment on this issue because the Minister of Parliamentary Affairs is here. *(Interruptions)* I will permit you, but not on this. *(Interruptions)* First, let me make my comment on this. I will permit you. If you like, you can come to my room. I will tell you how we function in this House so that it becomes easy for you.

श्री राज बब्बर : मेरे लिए थोड़ा सा यावा हो रहा है । बार बार मुझे हो कहा जाता है कि फंक्शनिंग नहीं मालूम है। अगर मस्तगुल के बारे में डिसकस किया जा सकता है और टैरोरिस्ट्स की नींव कहां पर है मैं कहता हूं कि आप उनकी बुनियाद पर क्यों नहीं जाते ? गलियारों की बात करते हैं... (व्यवधान)

उपसभापति : अभी आप बैठिए ।

श्री राज बब्बर : स्वाभिमान की बात कहते हैं और कहते हैं कि फंक्शनिंग नहीं आती, ठीक है, अगर मुझे फंक्शनिंग नहीं आती.... (व्यवधान)

THE DEPUTY CHAIRMAN: Don't get agitated. Don't get agitated. Functioning of this House' also means that you should give in writing what you want to say. We do not have any method of reading your mind. I wish we had. We do not have that kind of a device. When Mr. Md. Salim was speaking, Mr. Gurudas Das Gupta was raising his hand. When I asked him whether he wanted to speak on the same subject, he said 'Yes'. Similarly, Mr. Jaipal Reddy was also raising his hand. When I asked him whether he wanted to speak on the same subject, he said 'Yes'. Then, I allowed them. When I asked you whether you wanted to speak on the same subject, you said 'Yes'. I permitted you. If it was not on the same matter, if you wanted to speak on a different subject, I would have said: 'Don't worry; I will permit you'. Still we have got some time before the lunch-hour. I can allow you. Don't get agitated. We have already had a number of agitations. Enough of it. It is enough for today.

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Madam, the hon. Minister made a commitment.

THE DEPUTY CHAIRMAN: That is why I wanted to comment. Otherwise, I would have permitted him. *I did not, because I wanted in comment on it.*

Mr. Raaj Babbar, I would like to point out to you that in this very House, one Member had raised the issue. It was Mr. Viren J. Shah. He was threatened. The then Chair-

[The Deputy Chairman]

man accepted his privilege motion. Therefore, we protect the rights of the Members to raise various issues. In this case, the matter came before the Privileges Committee, before me.

Now, since Mr. Md. Salim has raised the issue and several others have supported it, if something is happening within the precincts of Parliament, if some lobbying is going on, if some unauthorised people are roaming around—I do not know because I hardly go out of my room; not even to the Central Hall—we will find out. As the Minister of Parliamentary Affairs, Mr. Shukla, mentioned about having an Ethics Committee, we will think about it. We will find out. I will discuss it with the Chiarman and find out what he says about it. We will discuss it with the Members and the leaders of the various parties also and find some way अब आप बोलिए ।

श्री राज बब्बर : माननीय उपसभापति महोदय., मैं सिर्फ यह कहना चाह रहा हूं कि यह एक बुनियादी सवाल है, मैं बहुत देर से हाथ खड़ा कर रहा था और इसलिये कि हर सवाल का जवाब माननीय मंत्री जी ने दिया, बड़ी खुशी की बात है और मैं उसका स्वागत करता हूं, लेकिन सिर्फ एक बात कहना चाहता हूं जोकि एक बुनियादी बात है, इससे बहुत सारी जुड़ी हुई है टैरोरिज्म के बारे में जब बात हो रही थी, मैं मुआफी चाहता हूं कि वापस जा रहा हूं टेरोरिज्म को शह देने के लिए बहुत सारी चीजें हैं, जिस तरह कि इस तरफ से कहा भी गया, किस तरह से लोग वहां पर निकल करके चले जाते हैं, न तो सैक्योरिटी और यहां तक कि प्रेस जो है, उनकी तस्वीर खींच करके भेजती है। यह एक बहुत ही खतरनाक चीज है, जिसमें कि उन लोगों को हीरो बनाया जाता है। टैररिस्टस को छोड़ दिया जाता है और बेगुनाह लोग सड़ते हैं । मैडम, यह एक बुनियादी बात है कि बेगुनाह लोग आज तक सड़ रहे हैं और उन के बारे में किसी ने ठीक जवाब नहीं दिया है। सदन में क्रिमिनल लॉ बिल के बारे में बात कही गयी हो या "टाडा" के बारे में बात कही गयी हो, कोई कह रहा है, कि "टाडा" को खत्म कर दिया है, कोई कह रहा है कि क्रिमिनल लॉ बिल क्यों नहीं आ रहा है, कोई कह रहा है कि इस सवाल पर कनसेंसस से बात की जाएगी? मैं यह कहना चाहता हूं कि जब एक बात मान ली गयी है कि उस कानून का मिसयूज हुआ है, दुरुपयोग हुआ है तो वह किस के साथ हुआ है ? वह कोई सड़क पर या टूटी हुई साख के साथ तो नहीं हुआ है ? आखिर इंसानों के साथ दुरुपयोग हुआ है। तो उन इंसानों के बारे में क्या सोचा गया है । आज 8 दिन हो गये हैं, उस कानून को खत्म हुए और उन लोगों जिन पर कि यह कानून लादा गया है, जिनके ऊपर इस जहरीली छुरी से वार किया गया है, वह आज तक सेप्टिक के अन्दर पड़े हुए हैं । मैं यही कहना चाहता हूं कि मंत्री जैसे बाकी सारे सवालों का जवाब दे रहे हैं, थोड़ा सा जवाब इस बारे में भी दे दें कि उन मासूमों के बारे में इस सरकार ने क्या सोचा है ? बहुत बहुत शुक्रिया, आपने मुझे बोलने का समय दिया ।

उपसभापति : अब कभी भी आप को किसी विषय पर बात करनी हो, तो आप लिखकर दीजिए, समय होगा, तो आपको जरूर बुलवाएंगे, आखिर आप इस हाउस के मेम्बर हैं।

श्री राज बब्बर : मैडम, मैं उनकी बात का अनुमोदन करना चाहता था और काफी देर से हाथ खड़ा कर रहा था।

उपसभापति : अनुमोदन भी लिखकर करते हैं।

श्री राज बब्बर : मैडम, मैं आइंदा लिखकर ही करूंगा।

उपसभापति : श्री डब्ल्यू० कुलविधु सिंह।

RE: CANCELLATION OF FLIGHTS TO IMPHAL

SHRI W. KULABIDHU SINGH (Manipur): Thank you, Madam Deputy Chairman, for allowing me to make a Special Mention on a matter of great public importance. it is about cancellation of air-flights to Imphal.

The capital city of Imphal was connected with the national capital of Delhi for more than 11 years since 1979 till February 18, 1990 when the A-320 Bangalore aircraft crash took place. When the daily flights were thus cancelled thereafter Imphal was connected with Guwahati and Delhi by a thrice-a-week service and with Calcutta by a daily service.

The matter was raised intermittently by me in this august House. Minister after Minister of Civil Aviation gave assurance that the daily flights to Imphal *via* Guwahati from Delhi would be resumed when the grounded A-320 aircraft would be operated.

[The Vice Chairman (Shri Md. Salim) in the Chair]

I believe that most of the seventeen grounded A-320 aircraft have been made operational already by now. The question now is: why even the daily flights from Calcutta to Imphal and back have been reduced to five times a week? Monday and Saturday flights have been cancelled since 7.3.95. The route is Imphal-Dimapur.Calcutta. Guwahati has been totally cut off from Imphal now.

I called on the then Civil Aviation Minister Shri Harmohan Dhawan, some time in June 1991. He gave me na assurance that the daily fight from Delhi to Imphal *via* Guwahati would be resumed as soon as possible as and when the availability of aircraft would improve. I am referring to his letter dated 2.7.91.

When the Civil Aviation Ministry was piloted by Shri Madhavrao Scindiaji in late 1991 the matter was again raised some time in October, 1991. Shri Scindiaji in his kind letter addressed to me dated 21.11.91 fully recognised the need for augmenting the frequency of the service in this sector. Let me quote Shri Scindiaji:

> "We will give serious consideration to augment the frequency further as soon as we have more A-320 aircraft in hand with the progressive completion of the training of the pilots."

Then again on 21.2.93 through a Special Mention, I raised the matter of the need to resume Imphal-Guwahati-Delhi air service. The hon. Minister of Civil Aviation, Shri Ghulam Nabi Azad was pleased to reply by his letter to me dated 7.2.1994. He referred to crew and other operational constraints and said that the Delhi-Imphal link would not be reintroduced as yet.